नित नए आयाम छू रहा है वीयू का जबलपुर महाविद्यालय

नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के अंतर्गत पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय जबलपुर विगत तीन से चार वर्षो में सफलता के नित नए आयाम छू रहा है जिसमे प्रमुख रूप से विश्व स्तरीय एजुकेशन एक्सचेंज प्रोग्राम के अंतर्गत रूस से एमओयु, पशु चिकित्सा परिसर में आधुनिक उपकरणों की उपलब्धता एवं वन्य जीवों का उपचार एवं संरक्षण सम्मिलित है महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग में उत्कृष्ट शोध कार्य प्रगतिशील है जिससे देश को अच्छे वेटरनरी डॉक्टर्स एवं शोधकर्ता मिल रहे है।

बिगत तीन से चार वर्षो में पशु चिकित्सा परिसर जबलपुर भी पशु के इलाज और उसके निदान में नित नए आयाम छू रहा है अत्याधुनिक उपकरणों जैसे सी टी स्कैन मशीन, सोनोग्राफी, एक्स रे, आटोमेटिक सोमेटिक सेल काउंटर, आटोमेटिक ब्लड ऐनालाइज़र अत्यादि उपकरणों की मदद से विभिन्न बीमारियों के निदान में आसानी हुई है जिससे कई बीमारियों का सही समय पर इलाज संभव हो पाया है। नए उपकरणों के आ जाने से अब पशु चिकित्सा परिसर में रोजाना आने वाले पशु रोगियों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है जिससे क्लीनिकल विभागों में स्नातकोत्तर करने वाले छात्र–छात्राओं को उत्तम नैदानिक अनावरण मिला है। जिससे क्लीनिकल विभागों (मेडिसिन, सर्जरी एवं गायनेकोलॉजी) में स्नातकोत्तर छात्र एवं छात्राओं की संख्या में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। अनेक राज्यों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, हरयाणा, पंजाब, राजस्थान एवं देश के अनेक राज्यों से छात्र जबलपुर आ रहे है जिसका श्रेय माननीय कुलपति महोदय डॉ सीता प्रसाद तिवारी जी को जाता है जिन्होंने पशु चिकित्सा परिसर में उत्कृष्ट सुविधाएं सुचारु रूप से चालू करबाई। इसके अतिरिक्त पशु चिकित्सा परिसर में विशेष नैदानिक एवं शोध कार्यक्रम भी कार्यरत है जिससे पशु प्रेमियों एवं पशु पलकों को उनके पशुओं के उपचार से सम्बंधित उच्च स्तरीय सुविधाएं उपलब्ध हो रही है।

विभाग विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से प्रगति कर रहा है और विभिन्न प्रकार के मामलों से निपट रहा है। हाल ही में, रुमेनोटॉमी के माध्यम से एक मवेशी से 80 किलोग्राम पॉलीथिन सफलतापूर्वक निकाला गया। हाइड्रोथोरैक्स के 10 से अधिक मामलों की पहचान की गई है और उन्हें सफलतापूर्वक हटाया गया है। कंप्यूटेड टोमोग्राफी एक नया उपकारण है और इसका उपयोग ट्यूमर, मस्कुलोस्केलेटल विकारों आदि के विभिन्न मामलों के निदान के लिए किया जाता है। इसका उपयोग करके एक बकरी में मस्तिष्क में परजीवी और सिस्ट के एक मामले की पहचान की गई और सफलतापूर्वक इलाज किया गया। विभिन्न हृदय संबंधी बीमारियों के लिए इकोकार्डियोग्राफी की जाती है। पालतू जानवरों में फ्रैक्चर के उपचार के लिए नए बायोमटेरियल विकसित किए गए हैं। विभिन्न मापदंडों को मानकीकृत करने के लिए गिर गाय की आंख का बायोमेट्रिक्स किया गया। पलक के बड़े हिस्से को हटाने के लिए क्रायोथेरेपी का उपयोग किया जा रहा है और पक्षियों और छोटे पशुओं के लिए नए एनेस्थेटिक प्रोटोकॉल को मानकीकृत किया गया है।

जबलपुर के स्कूल ऑफ वाइल्डलाइफ फॉरेंसिक एंड हेल्थ को मिले नए उपकरण, वन्यजीवों का इलाज अब आसान

पिछले दो सालों (2022–2024) में स्कूल ऑफ वाइल्डलाइफ फॉरेंसिक एंड हेल्थ (एसडब्ल्यूएफएच) ने वन्यजीवों के इलाज में अपनी क्षमता को काफी बढ़ा लिया है. संस्थान को मिले नए अत्याधुनिक उपकरणों की बदौलत अब जंगली जीवों का इलाज सीधे घटनास्थल पर ही करना संभव हो गया है. इससे बीमारियों का जल्दी पता लगाकर बेहतर इलाज भी मुहैया कराया जा सकेगा.

- स्कूल को एक नया पोर्टेबल X-ray मशीन मिला है, इससे जंगली जीवों को इलाज के लिए लाने–ले जाने की अब जरूरत नहीं पड़ेगी.
- एक विशेष इनक्यूबेटर भी मिला है, जिसकी मदद से जंगल कैट के तीन बच्चों को स्वस्थ किया गया है.
- मरीजों की निरंतर निगरानी के लिए नए पैशेंट मॉनिटर मिलने से भी इलाज में काफी मदद मिल रही है.

एसडब्ल्यूएफएच ने पिछले दो सालों में कई वानरों और पक्षियों का सफलतापूर्वक इलाज किया है और उन्हें वापस जंगल में छोड़ दिया है। संस्थान ने एक रीसस बंदर को जटिल फ्रैक्चर से उबारने में भी सफलता हासिल की है, साथ ही बाघ के शावक, भालू और सियार को रेस्क्यू (बचाने) करने में भी अहम भूमिका निभाई है। उल्लेखनीय है कि संस्थान ने घायल तेंदुए का इलाज कर उसे नजदीकी रेस्क्यू सेंटर में स्थानांतरित भी किया है.

गौरतलब है कि एसडब्ल्यूएफएच ने संजय टाइगर रिजर्व में गौरों के पुनःस्थापन परियोजना में वन विभाग और वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई) के साथ मिलकर वन्यजीवों के स्वास्थ्य की निगरानी में भी अहम भूमिका निभाई है।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर